International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 78-80

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 78-80
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-03-2019
Accepted: 21-04-2019

डॉ. मीनू सिंह
एम0ए0 (संस्कृत)एम0एड0,
पी0एच0डी0, नेट, इलाहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. मीनू सिंह
एम0ए0 (संस्कृत)एम0एड0,
पी0एच0डी0, नेट, इलाहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

प्रयाग में समुद्रकूप एवं नागवासुकि का महात्म्य

डॉ. मीनू सिंह

प्रस्तावना

"प्रयाग माहात्मय प्रसंग एवं नागवासुकि का माहात्म्य वर्णन" भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश राज्य में प्रयाग का धार्मिक एवं ऐतिहासिक तथा राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान हैं ब्रह्मा के प्रकृष्ट यज्ञ करने के कारण इसका प्रयाग नामकरण किया है। प्रयाग प्रतिष्ठानपुर (झूँसी) से वासुकि तक का भाग, जहाँ कम्बल अश्वतर और बहुमूलक नामवाले नाग निवास करते हैं, तीनों लोकों में प्रजापति क्षेत्र के नाम से विख्यात हैं–

आप्रयागं प्रतिष्ठानादापुराद वासुके ह्रदात्
कम्बलाश्वतरौ नागौ, नागोच्च बहुमूलकोत्
एतत् प्रजापतेः क्षेत्रं त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्।।
(मत्स्यपुराण)

प्रयाग गंगायमुना और अदृश्य सरस्वती के तट पर बसा हुआ है। भारत में देव, रूद्र, कर्ण, नन्दादि पाँच प्रयाग प्रसिद्ध हैं। प्रयाग को तीर्थों का राजा कहा गया है। प्रयाग के विषय में कहा गया है–

श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं पुराणमप्यत्र परं प्रमाणम्।
यत्रास्ति गंगा यमुना प्रमाणं स तीर्थराजो जयति प्रयागः।।
न तत्र योगाचरण प्रतीक्षा न यत्र यज्ञेष्टि विशिष्टदीक्षा
न तारकज्ञान गुरोरपेक्षा स तीर्थराजो जयति प्रयागः 1/2
सितासिते यत्र तरङ्गमचामरे नद्यो विभान्ति मुनिभानुकन्यके
लीलातपत्रं वट एवं साक्षात् स तीर्थराजो जयति प्रयागः।।

प्रयाग को तीर्थराज कहा गया है–

कुरूक्षेत्र गया गंगा प्रभास पुष्कराणि च।
एतानि पुण्य तीर्थानि स्नाने काले भवन्त्विह।।
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि में तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तु ते।।

महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य रघुवंश में लिखा है कि प्रयागराज में स्नानमात्र से ही लोग भववन्धन से मुक्त हो जाते हैं–

समुन्द्रपत्न्योर्जल सन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात्
तत्वावबोधेन विनापि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः

प्रयाग की महिमा पर प्रयागशताध्यायी के अतिरिक्त महाभारत वनपर्व –85–7, ऋक् प0 7/05/18 अग्नि, गरुड़, नारद, कूर्म पद्म स्कन्द, सौरादिपुराणो में भी कई अध्याय है। इसके अतिरिक्त त्रिस्थली सेतु, तीर्थकल्पतरू, तीर्थ चिन्तामणि आदि में भी प्रयाग की महिमा का गुणगान किया गया है। यहाँ 60 हजार धनुर्धरवीर गंगा की रक्षा करते हैं तथा सात घोड़ो से रथ पर चलने वाले सूर्य सदा यमुना की

देखभाल करते हैं। महेश्वर हाथ में त्रिशूल लेकर सदा वट वृक्ष की रक्षा करते हैं प्रयाग तीर्थ के दर्शन, नाम संकीर्तन अथवा मृत्तिका का स्पर्श करने से मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है। दर्शनात् तत्तीर्थस्य नाम संकीर्तनादपि। मृत्तिकालम्भना दवापि ननः पापात् प्रमुच्यते।"

जो मनुष्य प्रयागस्थेित अक्षयवट के नीचे पहँचकर प्राणों का परित्याग करता हैं,वह अन्य सभी पुण्य लोकों का अतिक्रमण कर रूद्रलोक को चला जाता है।

वटमूलं समासाद्य यस्तु प्राणान् सर्वलोकान तिक्रम्य रूद्रलोकं सगच्छाति।।

मत्स्यपुराण में लिखा गया है कि जो व्रतनिष्ठ मनुष्य उस संगम में स्नान करता है, उसे राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञों के समान फल की प्राप्ति होती है। इसी पुराण में लिखा गया है कि दस हजार बड़े तीर्थ और तीन करोड़ अन्य तीर्थ हैं, उनका प्रयाग में ही वास होता है। प्रयाग में अनेक तीर्थ है–

त्रिवेणीयं माधवं सोमं भारद्वाजं वासुकिं
वन्दे अक्षयवटं शेषं प्रयाग तीर्थनामकम्।।

वासुकि हद के उत्तर दिशा में भोगवती नामक तीर्थ है। प्रयाग में हंसप्रपतन (झूँसी के उत्तर) उर्वशी रमण हंसपाण्डुर, ऋण प्रमोचन, धर्मराजतीर्थ, अग्नितीर्थ, अलोपश्ंकरी, दशाश्वमेध, मनकामेश्वर, कल्याणी देवी, आदि धार्मिक तीर्थ हैं।

सोमतीर्थ महानपुण्यप्रद और पापों का विनाशक है। प्रयाग का मण्डल पाँच योजन (20 मील) में फैला हुआ है। प्रतिष्ठान से उत्तर की ओर गुप्तरूप से ब्रह्मा जी निवास करते हैं। भगवान विष्णु प्रयाग में वेणीमाधव के रूप में विद्यमान हैं। परमेश्वर शिव अक्षयवट के रूप में। इनके अतिरिक्त गन्धर्वों सहित देवगण, सिद्ध समूह और यूथ के यूथ परमर्षि पापकर्म से निवारण के लिए नित्य प्रयाग मण्डल की रक्षा करते हैं। प्रयाग प्रजापति ब्रह्मा का क्षेत्र हैं।–

प्रयाग के धार्मिक स्थानों में समुन्द्रकूप और नागवासुकि के महात्म्य का वर्णन इस प्रकार है।

नागवासुकि

नागवासुकि मन्दिर दारागंज मोहल्ले के उत्तरी छोर पर परम पावन माँ गंगा के पावन तट पर स्थित है। इस मन्दिर में नागवासुकि देव का पूजन होता है। नागवासुकि को शेषराज, सर्पनार्थ, अनन्त, और सर्वाध्यक्ष कहा गया है। भगवान शंकर और विघ्नहन्ता गणेश इन्हे अपने गले में माला की तरह धारण करते हैं। पद्मपुराण में इन्हें संसार की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश को कारण कहा गया है।

नमामि त्वां शाश्वतं शेषराजं
विश्वोत्पत्तिस्थानसंसारहेतु
सर्वाध्यक्षं वासुकिं त्वां नमामिं।।

पुरांण में कहा गया है कि गंगा स्वर्ग से गिरी तो, तो वे पृथ्वी लोक से पाताल लोक में चली गई। पाताल लोक में उनकी धार नागवासुकि के फन पर गिरी इस स्थान पर भोगवती तीर्थ की सृष्टि हुई। नागवासुकि और शेष भगवान् पाताल लोक से चलकर वेणीमाघव का दर्शन करने प्रयाग आये तो भोगवती तीर्थ भी यहाँ आ गया। नागवासुकि के साथ भोगवती तीर्थ का वास माना जाता है। नागवासुकि मन्दिर से पूर्व की तरफ गप्राके पश्चिमी हिस्से में भोगवती तीर्थमाना जाता है। वरसात के दिनों में जब गग्गा में बाढ़ होती है तब इसका जल नागवासुकि मन्दिर की सीढ़ियों तक पहुँच जाता है। श्रद्धालु तब भोगवती तीर्थ में स्नान करते हैं। सन् सत्रह सौ उनचालीस में नागपुर के शासक रघुजी भोसले ने इलाहाबाद पर हमला किया। उन्होंने इलाहबाद सूबे के प्रधानशासक शुजा खान को लड़ाई में हराकर मार डाली। माराठा सैनिकों ने इलाहबाद शहर को बुरी तरह लूटकर कंगाल बना दिया राजा के राज पण्डित श्रीधर ने जीर्ण नागवासुकी मन्दिर का फिर से निर्माण कराया।

कहा जाता है कि मराठा राजा को कुष्ठ रोग हो गया था राजपण्डित ने मान्यता (मानता) मानी थी कि अगर राज रोग मुक्त हो जायेंगे तो वे मन्दिर का जीर्णोद्वार करायेंगे। राजा का रोग दूर हो गया, कृतज्ञ राजपण्डित ने मन्दिर के साथ ही पक्के घाट का निर्माण करा दिया।

आजादी के बाद नागवासुकि घाट पर जीर्णोद्वार उत्तर प्रदेशकी कॉंग्रेस सरकार के शासन काल में हुआ पद्मपुराण के पातालखण्ड में कहा गया है कि पाताल क्षेत्र की उत्तरी सीमा नागवासुकी के समीप समाप्त होती है। इस क्षेत्र में अनेक लोगों का निवास है। इसी क्षेत्र में एक नागकुण्ड बताया गया है। इस नागकुण्ड में स्नान करके नावासुकि और शेषनाग की पूजा करने से मनोकामना पूर्ण होती है और परिवार में किसी को सॉप काटने का भय नहीं होता है। इस नागकुण्ड का अब पता नहीं चलता।

प्रयाग के विषय में लिखी गई पुस्तकों से पता चलता है कि पुराने समय में गप्रा की अविरल धारा भरद्वाज आश्रम के नीचे से बहती थी लेकिन नागवासुकि टीला उस समय में भी अस्तित्व में था, इसके आस–पास ऊँची धरती थी, जिस पर घना जंगल था, इस जंगल में विषैले नाग बड़ी संख्या में थे।

नागवासुकि मन्दिर– कहा जाता है कि मुगलकाल में औरङ्ग्जेब हिन्दू स्थलों को जब पूर्णरूप से तहस–नहस कर रहा था, तो उसने नागवासुकि मन्दिर को भी तोड़ने का प्रयास किया था लेकिन जब इसमें मुगल सैनिक सफल नहीं हुए, और इसकी ख्याति मुगल सम्राट औरङ्ग्जेब तक पहुँची तो वह स्वयं प्रयाग आया और उसने नागवासुकि मन्दिर को तोड़ने के लिए आक्रमण कर दिया। मन्दिर के पुजारी बताते है। कि औरप्रजेब गप्रा तट की ओर से मदिन्र में पहुँचा और अपनी तलवार निकाल कर जैसे ही नागवासुकि की मूर्ति पर वार किया सहसा नागवासुकि का दिव्य स्वरूप–प्रकट हो गया। उनके विकराल और भयंकर स्वरूप को देखकर औरङ्ग्जेब कॉंपने लगा और डर कर बेहोश हो गया। नागवासुकि कैसे प्रयाग आये, इसका विवरण पद्मपुराण के पातालखण्ड और श्रीमद्भागवत में विस्तारपूर्वक मिलता है। कथा के अनुसार समुद्रमन्थन में देवताओं और असुरों ने नागवासुकि को सुमेरू पर्वत में लपेट कर उनका प्रयोग रस्सी के तौर पर किया था। मन्थन समाप्त हुआ तो उनके शरीर में जलन होने लगी। जलन को दूर करने के लिए वासुकि मन्दराचल पर्वत चले गये लेकिन उनके शरीर की जलन खत्म नहीं हुई। तब नागवासुकि ने भगवान विष्णु से अपनी पीड़ा के बारे में बताया और जलन समाप्त करने का उपाय पूछा। भगवान विष्णु ने नागवासुकि को बताया कि वह प्रयाग चले जाएं, वहाँ सरस्वती नदी के अमृत जल का पान करें और वहीं विश्राम करें तो उससे उनकी सारी पीड़ा समाप्त हो जायेगी। मान्यता है कि परमपिता ब्रह्म के मानस पुत्रों ने नागवासुकि को मूर्ति के रूप में स्थापित किया है। इस मन्दिर में प्राप्त पत्थर दसवीं सदी में भी प्राचीन बताये जाते हैं। मन्दिर परिसर गणेश व पार्वती भीष्म पितामह की शरशय्या पर लेटी हुई प्रतिमा व भगवान शिव की भी मूर्ति स्थापित है। इस मन्दिर का सैकड़ों वर्ष पहले नागपुर के राजा श्रीधर भोसले ने जीर्णोद्वार कराया था। जब कि 2009 में पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने मन्दिर की फर्श व दीवार को ठीक कराया था।

प्रयाग में स्थित समुद्र कूप और नागवासुकि मन्दिर का माहात्म्य

गंगा के पूर्वीतटपर तीनों लोकों में विख्यात समुद्रकूप और प्रतिष्ठानपुर है। वहाँ मनुष्य यदि तीन रात क्रध को वश में करके ब्रह्मचर्य पूवर्क निवास करता है उसकी आत्मा समस्त पापों से मुक्त होकर शुद्ध हो जाती है और वह अश्वमेघ यज्ञ के फल को प्राप्त करता है। यह गप्रा नदी के तट पर स्थित ऊँचे टीले पर एक कुआँ है। यह कूप राजा समुद्रगुप्त के द्वारा बनवाया गया था इस लिए इसका नाम समुद्रकूप है। बड़े–बड़े पत्थरों से निर्मित इस कूप का

व्यास 15 फिट है और गहराई में यह अनन्त है। इसका जल स्तर नीचे समुद्र स्तर के बराबर है। यह बड़े पत्थर से बनाया गया है। समुद्रकूप का दूसरा अर्थ है– समुद्र के पानी से बना कुण्ड। प्रयाग में स्थित समुद्रकूप हजारों वर्ष पुराना है और सैकड़ों फीट गहरा है। पुराणों में वर्णित है। कि इस कुएँ में सात समुद्रों का जल आकर मिलता है। इस समय यह कूप गप्रा के किनारे एक विशाली ऊँचे टीले पर निर्मित है।

इस कूप के जगत पर विष्णु का पदचाप एवं शिव जी की मूर्ति है समुद्रकूप का पूरा परिसर 10 से 12 फीट ऊँची ईट की चहार दीवारी से घिरा है। समुद्रकूप के पास आश्रम भी है जहाँ यह वर्णन मिलता है कि द्वापर युग में पाण्डव लाक्षागृह से बचने के बाद यहाँ आये थे।

पद्मपुराण और भागवत पुराण में यह वर्णन मिलता है कि कई हजार वर्ष पहले चन्द्रवंश के प्रथम राजा पुरूरवा ने इलाहाबाद के समीप गप्रा नदी के किनारे प्रतिष्ठानपुरी नगर बसाया था। प्रतिष्ठान को वर्तमान में झूँसी कहते हैं। उहोंने कई सालों तक यहीं रहकर अपना शासन किया। उनके शासन काल में स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी भी उनके साथ करीब 100 वर्ष तक यहीं रहीं। उर्वशी को ऋषि दुर्वासा ने तप में बाधा उत्पन्न करने के कारण मृत्यु लोक में रहने का शाप दिया था। इन्हीं राजा पुरूरवा और उर्वशी की सन्तान से चन्द्रवंश चला और चन्द्रवंश की 65 कड़ी में भगवान कृष्ण ने जन्म लिया।

उन्हीं पूरूरवा ने ही इस समुद्रकूप का निर्माण करवाया था। राजा ने कई यज्ञ और अनुष्ठान के लिए सातों समुद्रों का आख्वान इस कूप में किया था। तभी से इस कूप में सातों समुद्रों का जल पाया जाता है। इस कूप का कुल व्यास 22 मीटर का है तथा इसकी गहराई के विषय में अनुमान लगाया नहीं जा सकता है। ऊपर से देखने पर यह करीब 100 फिट गहरा दिखायी देता है। परन्तु जिन लोगों ने इस कूप में प्रवेश किया है, उनका मानना है कि इस कुएँ की सतह पर एक लोहे का तवा रखा हुआ है। जिसके अन्दर न जाने कितना और गहरा इसका स्रोत है।

गप्रा नदी के किनारे होने के बावजूद आज भी इस कुएं पर पानी समुद्र के पानी की तर खारा है जिससे यह सिद्ध होता है कि इस कूप से समुद्र का जल है। समुद्र कूप के पुजारी महन्त बालकृष्ण कहते है कि इस समुद्रकूप का वर्ण पद्मपुराण और मत्सपुराण में भी मिलता है।

जब द्वापर युग में पाँचों पाण्डव लाक्षागृह से बचकर आये थे तो उन्होंने यहीं पर रहके इस कुएँ को जल से अश्वमेघ यज्ञ किया था। यहीं से उनकी विजय के लिए ब्रह्मजी ने उन्हें वरदान दिया था।

पद्मपुराण में यह वर्णन भी मिलता है। कि एक मुनि ने इस कूप के विषय में युधिष्ठिर को बताया था। यह भी वर्णन मिलता है कि इस कूप के किनारे ब्रह्मर्चय का पालन करते हुए क्रोध को शान्त करके तीन रात तक यहाँ विश्राम कर ले तो उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके जल का आचमन करने से परम पद की प्राप्ति होती है। इस कूप के बारे में मत्स्य पुराण में भी लिखा है कि प्रतिष्ठानः पुरी में एक महान कूप है। जिसके दर्शनमात्र से मनुष्य पाप रहित हो जाता है। अमावस्या, पूर्णिमा और चन्द्रग्रहण के समय इस कूप की परिक्रमा से पृथ्वी की परिक्रमा का फल मिलता है।

यहाँ पर स्नान–दान करने से यश प्राप्त होता है। और अन्त में मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त होता है। कहा जाता है कि महाकुम्भ में संगम किनारे कल्पवास करने के बाद यदि इस समुद्रकूप दर्शन नहीं किया तो कल्पवास करने के बाद यदि इस समुद्रकूप दर्शन नहीं किया तो कल्पवास का सारा फल व्यर्थ हो जाता है।

स्दर्भ

1. डॉ श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, रघुवंशमहाकाव्यम्, चौरवम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, सं०– 1998
2. कर्मकांड भास्कर पं० देवनारायण शोकहा शास्त्री, श्री प्रयाग माहात्म्य भाषीटोकोपेतम्, श्री दुर्गा पुस्तक भंडार, इलाहाबाद, सं० 2002
3. शालिग्राम श्रीवास्तव, प्रयाग प्रदीप, हिंदुस्तानी अकेडमी, इलाहाबाद, सं० 1937
4. डॉ राजेंद्र त्रिपाठी, प्रयागराज कुम्भ कथा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2013
5. बनवारी लाल कंछल, तीर्थराज प्रयाग, मनोज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, सं० 2014